वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रकाशित

मंगलवार,पौष कृष्ण पक्ष,चतुर्दशी, कलियुग वर्ष ५१२२ (१२ जनवरी, २०२१)

वैदिक उपासना

राष्ट्र एवं धर्मके पुनरूत्थान हेतु समर्पित ऑनलाईन दैनिक वृत्त पत्र

धर्माचरण हेतु कष्ट उठाना, राष्ट्र हेतु समय देना एवं साधना हेतु त्याग करना, यह सनातन उपासना है।

e-mail : upasanawsp@gmail.com, website : www.vedicupasanapeeth.org.

कलका पंचांग

जयतु जयतु हिन्दुराष्ट्रं

१३ जनवरी २०२१ का वैदिक पंचांग

कलियुग वर्ष – ५१२२ / विक्रम संवत – २०७७ / शकवर्ष - १९४२.....कलके पंचांगके सम्बन्धमें और जानकारी हेतु इस लिंकपर जाएं.....https://vedicupasanapeeth.org/hn/kal-ka-panchang-13012021

देव स्तुति

गजाननाय पूर्णाय साङ्ख्यरूपमयाय ते।
विदेहेन च सर्वत्र संस्थिताय नमो नमः ॥

अर्थ : हे गणेश्वर ! आप गजका मुख धारण करनेवाले, पूर्ण परमात्मा और ज्ञानस्वरूप हैं । आप निराकार रूपसे सर्वत्र विद्यमान हैं, आपको बारम्बार नमस्कार है।

शास्त्रवचन

कलेर्दोषनिधे राजन्नस्ति ह्येको महान गुणः ।
कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तसंगःपरं ब्रजेत ।

अर्थ : यद्यपि कलयुग दोषोंका कोष है; तथापि इसमें एक बहुत बडा गुण है । जो श्रीकृष्ण नामका कीर्तन करते हैं, वे बन्धनसे छूटकर परमात्माको प्राप्त करते हैं ।

****

मधुरमधुरमेतन्मंगलं मंगलानां,
सकलनिगमवल्लीसत्फलं चित्स्वरूपम् ।
सकृदपि परिगीतं श्रद्धया हेलया वा,
भृगुवर नर मात्रं तारयेत् कृष्णनाम ॥

अर्थ : स्कन्दपुराणमें वर्णित नामजप महिमा : 'भृगुवर शौनक ! श्रीकृष्ण परमात्माका नाम सकलनिगम लताओंका सत्फल, चैतन्यरूप मङ्गलोंका मङ्गल और मधुरसे भी मधुर है ।
इस नामका जो श्रद्धासे गान करता है, उसे तो यह संसार सागरसे पार करता ही है; किन्तु अवहेलनासे (अनादर या निन्दासे) भी एक बार भी उच्चारण करनेवालोंको यह जगतके बन्धनसे मुक्त करके शाश्वत सुखमें पहुंचा देता है ।

धर्मधारा

१. हिन्दू राष्ट्र आवश्यक क्यों ? (भाग-६)

भारतीय राजनीति अपनी अधोगतिकी परिसीमाको प्राप्त हो चुकी है । आजके नेताओंके वक्तव्य हमें बताते हैं कि उनकी मानसिकता कैसी हो चुकी है ? एक दूसरेमें दोष ढूंढना, अपनी चूकोंको स्वीकार न कर उसका दोषारोपण दूसरोंपर करना, विपक्षी नेताओंके व्यक्तिगत जीवनसे सम्बन्धित प्रसंगोंको

लेकर अनर्गल बातें करना, एक दूसरेको नीचा दिखाना, राष्ट्रहित छोडकर अपने दल, जाति, प्रान्त इत्यादिके विषयको लेकर बातें करना, यह सब कृत्य अब राजनीतिके अविभाज्य अंग बन चुके हैं। स्वस्थ राजनीतिका पुनर्जन्म हो, इस हेतु अब मात्र एक ही पर्याय है और वह है हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना करना !

****

२. चरित्र ही है व्यक्तित्वका आभूषण !

स्वामी विवेकानन्द विश्व धर्म सम्मलेनमें भाग लेने शिकागो (अमेरिका) गए थे। उनकी भगवा वेशभूषाको देखकर एक विदेशी महिलाने उनका उपहास करते हुए पूछा, "यह क्या है ?" वे वाक्पटु तो थे ही, उन्होंने तपाक उत्तर दिया, "यह आपका देश है, जहां सौचिक (दर्जी) और वेषभूषा आपके व्यक्तित्वका निर्माण करते हैं; परन्तु हमारे देशमें चरित्र, व्यक्तित्वका निर्माण करता है।"

परन्तु ऐसे सुसंस्कृत भारतकी विडम्बना तो देखें कि वर्तमान स्वतन्त्र भारतमें हमारी यह धर्मनिरपेक्ष व्यवस्था, मैकालेकी अधर्मी शिक्षण पद्धति और पाश्चात्य संस्कृतिके अन्धानुकरणसे, इस देशको मात्र बाह्य व्यक्तित्व सवांरनेकी कला सिखानेमें लगी है; फलस्वरूप आज सौन्दर्य प्रसाधनोंके उत्पादनों एवं मांगमें भारी वृद्धि हुई, गली-गलीमें सौन्दर्य संवर्धन केन्द्र (ब्यूटी पार्लर) खुलने लगे हैं और सभी अब मात्र बाह्य रूपसे सुन्दर दिखनेमें प्रयासरत रहने लगे हैं और चारित्रिक कुरूपताका भयावह परिणाम यह है कि हमारे देशमें बलात्कार एक महामारी समान फैलने लगा है और अनेक आधुनिक कही जानेवाली स्त्रियां अपनी लोक-लज्जा छोड निर्लज्ज समान आचरण करने लगी हैं। राष्ट्रीय चरित्रके

नैतिक पतनका चरम यह है कि नर पिशाच अबोध बच्चियों, मूक-बधिर बालिकाओं, वृद्धाओं एवं विधवा, अपनी पुत्री, पुत्रवधू, पोती एवं दादीतकको अपनी वासनाका ग्रास बनाने लगे हैं।

****

३. आलसी, अशक्त पुरुषोंकी संख्यामें हो रही है वृद्धि !

वैदिक उपासना पीठके आश्रममें पिछले तीन वर्षोंसे देश-विदेशके अनेक पुरुष दस-पन्द्रह दिवस सेवाके लिए आते रहे हैं । मैंने इनमेंसे जिस भी युवा पुरुषको आश्रमसे ७०० मीटरकी दूरीपर स्थित मण्डीसे आठ-दस किलो तरकारी लाने हेतु कहा है, तब-तब सभी पुरुषोंका एक ही कहना रहा है, "चलकर और हाथमें तरकारी लेकर इतनी लम्बी दूरी कैसे तय करेंगे ?" मैं उनके इस वक्तव्यको सुनकर आश्चर्यचकित हो जाती हूं ! हिन्दू स्त्रियो ! यदि आपके घरमें भी ऐसे निर्बल, आलसी और अकर्मण्य पुरुष हैं, तो कृपया सावधान हो जाएं और आनेवाले भीषण कालमें अपने शील एवं प्राणोंकी रक्षा हेतु स्वयंसिद्ध हो जाएं !

और ऐसे बलहीन और आलसी पुरुषोंके लिए मेरा एक सन्देश है जिसे कृपया गम्भीरतासे लें ! आनेवाले दो-तीन वर्षोंमें ही सम्पूर्ण भारतके गली-कूचोंमें साम्प्रदायिक उत्पात होंगे, यह कालानुसार अवश्यम्भावी है, ऐसेमें आपसे, आपके घरके वृद्ध, स्त्री एवं बच्चोंके रक्षणकी हम कोई अपेक्षा नहीं रखते हैं; किन्तु 'कमसे कम' आप स्वयं उन अराजक तत्त्वोंसे अपने प्राणोंके रक्षण करने हेतु एक 'किलोमीटर' दौड सकें, इस हेतु अभीसे थोडा शारीरिक बल बढानेका प्रयास करें ! मुझे ज्ञात है कि मेरी यह कडवी घुट्टी आपके लिए असहनीय है; किन्तु यदि आप दस किलोका भार उठाकर एक किलोमीटर

नहीं चल सकते हैं तो आपसे, आपातकालमें किसीके रक्षणकी हम कोई आशा भी कैसे रख सकते हैं ?

– (पू.) तनुजा ठाकुर, सम्पादक

प्रेरक प्रसङ्ग

दृढ निश्चय

विद्यालयमें सब उसे मन्दबुद्धि कहते थे। उसके गुरुजन भी उससे रुष्ट रहते थे; क्योंकि वह पढनेमें बहुत सक्षम नहीं था और उसकी बुद्धिका स्तर सामान्यसे भी न्यून था।

कक्षामें उसका प्रदर्शन सदा ही निम्न रहता था और अन्य सहपाठी उसका उपहास उडानेसे कभी नहीं चूकते थे। पढने जाना तो मानो उसके लिए एक दण्डके समान हो गया था। वह जैसे ही कक्षामें प्रवेश करता और बच्चे उसपर हंसने लगते । कोई उसे 'महामूर्ख' तो कोई उसे 'बैलोंका राजा' कहता; यहांतक कि कुछ अध्यापक भी उसका उपहास उडानेसे नहीं चूकते थे । इन सबसे उद्विग्न होकर उसने विद्यालय जाना ही छोड दिया।

अब वह दिन भर इधर-उधर भटकता और अपना समय व्यर्थ करता। एक दिन इसी प्रकार कहीं जा रहा था, घूमते–घूमते उसे तृष्णाका आभास हुआ (प्यास लग गई)। वह इधर-उधर जल ढूंढने लगा। अन्तमें उसे एक कुआं दिखाई दिया। वह वहां गया और कुएंसे जल खींचकर अपनी 'प्यास' बुझाई। अब वह बहुत थक चुका था; इसलिए जल पीनेके पश्चात वहीं बैठ गया। तभी उसकी दृष्टि पत्थरपर पडी। जिसपर बार-बार कुएंसे पानी खींचनके कारण रस्सीका चिह्न बन गया था। वह मनही मन सोचने लगा कि जब बार-बार पानी खींचनेसे इतने कठोर पत्थरपर भी रस्सीका चिह्न पड सकता है तो निरन्तर

परिश्रम करनेसे मुझे भी विद्या आ सकती है। उसने यह बात मनमें बैठा ली और पुनः विद्यालय जाना आरम्भ कर दिया। कुछ दिवसोंतक लोग उसी भांति उसका उपहास उडाते रहे; परन्तु धीरे-धीरे उसकी लगन देखकर अध्यापकोंने भी उसे सहयोग देना आरम्भ कर दिया। उसने मन लगाकर अथक परिश्रम किया। कुछ वर्षों पश्चात यही विद्यार्थी प्रकाण्ड विद्वान वरदराजके रूपमें विख्यात हुआ, जिसने संस्कृतमें मुग्धबोध और लघुसिद्धान्त कौमुदी जैसे ग्रन्थोंकी रचना की। इससे प्रमाणित होता है कि दृढ निश्चयके समक्ष सब दोष क्षीण हो जाते हैं।

घरका वैद्य

अजवाइन (भाग-२)

अजवाइनके पोषक तत्त्व : 'कैरम सीड्स' (Carom Seeds) या अजवाइन और इसके तेलमें पोषक तत्त्वोंकी प्रचुरता होती है, जिसके कारण ही आज अजवाइनका प्रयोग पूरे विश्वमें हो रहा है। नियमित रूपसे अजवाइनका सेवन हमें सभी आवश्यक पोषक तत्त्व उपलब्ध कराता है। १०० ग्राम अजवाइनमें १७.१% 'प्रोटीन', २१.८% वसा, ७.९% खनिज पदार्थ, २१.२% 'फाइबर' और २४.६% 'कार्बोहाइड्रेट' होता है। इसके अतिरिक्त अजवाइनमे 'कैल्शियम', 'थायमिन', 'राइबोफ्लेविन', 'फॉस्फोरस', 'आयरन' और 'नियासिन'की भी अच्छी मात्रा होती है। अजवाइनके तेलको अजवाइनके बीजोंसे प्राप्त किया जाता है। अजवाइनका तेल निकालनेके लिए पौधेके फूल और पत्तेका उपयोग किया जाता है। इनमें ३५ से ६०% तक 'थाइमोल' होता है। अजवाइन और अजवाइनके तेलका उपयोग विशेष रूपसे

कीटाणुनाशकके रूपमें किया जाता है।

अजवाइनके लाभ : स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करनेके लिए अजवाइनका प्रयोग कई प्रकारसे किया जाता है। अजवाइनके गुण सङ्क्रमणसे फैलनेवाले रोगोंको रोकनेमें सहायता करते हैं। इसके अतिरिक्त अजवाइनके लाभ, महिला और पुरुषोंके स्वास्थ्यके लिए भी होते हैं। पुरुषों और महिलाओंमें कामेच्छाको बढानेके लिए अजवाइनका उपयोग प्राचीन समयसे किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त यह महिलाओंमें होनेवाले 'हार्मोन' असन्तुलनको भी नियन्त्रित करनेमें सहायक होता है।

हृदय स्वास्थ्यके लिए : पारम्परिक रूपसे मसालेके रूपमें उपयोग किए जानेवाला अजवाइन हृदयके लिए लाभकारी होता है। नियमित रूपसे इसका सेवन करनेपर यह हृदय सम्बन्धी रोगोंसे रक्षण कर सकता है। आप अपने हृदयको स्वस्थ रखनेके लिए अजवाइनके बीजको 'गर्म' पानीके साथ सेवन कर सकते हैं। इसके लिए आप १ चम्मच अजवाइन लें और इसे १ कटोरी जलमें कुछ देरके लिए उष्ण करें और इसे ठण्डा करके पी लें ! अजवाइनका पानी पीनेसे छातीकी पीडाको न्यून करता है। छातीकी पीडासे शीघ्र छुटकारा पानेके लिए आप १ चम्मच अजवाइनके साथ गुडकाभी सेवन कर सकते हैं।

उत्तिष्ठ कौन्तेय

चीनने कहा चूकवश सीमा पार पहुंचे हमारे सैनिकको छोडे भारत

चीनने पूर्व लद्दाखके चुशूल 'सेक्टर' स्थित 'गुरंग हिल'के समीप भारतीय सेनाद्वारा बन्दी बनाए गए अपने चीनी

सैनिकको त्वरित मुक्त करनेकी मांग की है । चीनी सेनाद्वारा संचालित समाचार 'पोर्टल' 'द चाइना मिलिट्री ऑनलाइन'ने अपने समाचारमें साझा किया है कि भौगोलिक विसंगतियों तथा अन्धकारके कारण उनका सैनिक मार्ग भटकते हुए भारतीय सीमामें पहुंच गया । इसके पश्चात उन्होंने 'फ्रंटियर डिफेंस फोर्स'द्वारा भारतीय सेनाको भी इस विषयसे अवगत कराया । प्रतिवेदनके अनुसार भारतने चीनी सैनिकके लुप्त होनेके २ घण्टे पश्चात ही उसके पकडे जानेकी पुष्टि की थी । भारतने यह भी स्पष्ट किया है कि चीनकी ओरसे वरिष्ठ अधिकारियोंसे वार्तालाप होनेके पश्चात ही सैनिकको मुक्त किया जाएगा; परन्तु चीनका कहना है कि भारतको तत्काल प्रभावसे सैनिककोन लौटाना चाहिए, जिससे सीमापर शान्तिपूर्ण और सामान्य स्थिति बनी रहे । वहीं भारतीय सेनाने अपने आधिकारिक वक्तव्यमें बताया कि चीनी सैनिक 'एलएसी'का उल्लङ्घन करते हुए भारत सीमामें चला आया था, जिसके पश्चात वहां उपस्थित भारतीय सैनिकोंने उसे बन्दी बना लिया । चीनी सैनिकके साथ दिशा निर्देशोंके अनुसार ही वर्तन किया जा रहा है । जिन परिस्थितियोंमें चीनी सैनिकने सीमा पार की है उसकी जांच भी की जा रही है ।

चीन जैसा शत्रु किसी भी षड्यन्त्रसे भारतके भेद जानने को आतुर रहता है; अतः हमारी भारतीय सैनाको भी बहुत ही चतुराईके साथ इस प्रकरणमें पग उठाने चाहिए ।

भारतीय सेनाकी सूचना पाकिस्तानको भेजनेके आरोपमें जिहादी अनस बनाया गया बन्दी

उत्तर प्रदेश 'एटीएस'ने शुक्रवार, ८ जनवरीको हापुडमें छापा मारकर पाकिस्तानके लिए 'जासूसी' करनेवाले भारतीय सेनाके एक पूर्व सैनिक सौरभ शर्मा और उसके सहयोगी अनस गितौलीको गुजरातके गोधरासे बन्दी बनाया गया है । इनके पाससे 'एटीएस'को 'टेरर फंडिंग'का साक्ष्य भी मिला है।

अब उत्तर प्रदेश एटीएस ये ज्ञात करनेका प्रयास कर रही है कि पाकिस्तानी गुप्तचर 'एजेंसी'को किस प्रकारकी सूचनाएं भेजी गई हैं ? सूचनाओंकी संवेदनशीलताके बारेमें ज्ञात करनेके लिए दोनोंके चलभाषकी 'फोरेंसिक जांच' भी कराई जा रही है। बता दें कि सौरभसे पूछताछमें पाकिस्तान गुप्तचर विभागके लिए गुप्तचरी करनेके प्रतिफलमें उसे धन भेजनेवाले गोधरा निवासी अनस गितौलीकी भूमिका सामने आई, जिसके पश्चात गुजरात 'एटीएस'की सहायतासे अनसको बन्दी बनाया गया । अनसका बडा भाई इमरान गितौली भी 'आईएसआईएस'के लिए कार्य करता था, उसे भी जांच विभागने बन्दी बनाया है।

जिहादी तो देशमें रहकर ऐसे कृत्य करते हैं, वह समझमें आता है; क्योंकि उनका वास्तविक प्रेम तो पाकिस्तान है और आतङ्क उनका धर्म है; परन्तु हिन्दू युवक सौरभ जैसे अनेक युवा जिहादियोंकी संगति व धन लोभके कारण देशद्रोह करते हैं; क्योंकि हिन्दू माता-पिता उन्हें संस्कार ही नहीं देना चाहते हैं । केवल धनको ही भगवान मानना सीखाते हैं। हिन्दू माता-पिता ऐसे प्रकरणसे बोध लें !

बंगालियोंके घर फूंको, पुलिसपर आक्रमण, असमको जलानेकी अखिल गोगोईकी योजना, 'एनआईए'के आरोपपत्रसे हुआ उजागर

राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरणने असमके वामपन्थी कार्यकर्ता अखिल गोगोईके विरुद्ध प्रविष्ट आरोपपत्रमें आरोप लगाया गया है कि वह असममें 'सीएए' विरोधी प्रदर्शनके समय राज्यमें रहनेवाली बंगाली जनसंख्याके विरुद्ध असमके लोगोंको भडकानेके प्रयासमें था और असममें समाजके दो वर्गोंके मध्य हिंसा भडकानेका षड्यन्त्र किया था । 'एनआईए'ने बताया कि अखिल गोगोई और साक्षीने ६००० से भी अधिक लोगोंकी भीडको सम्बोधित किया था । गोगोईने भीडको भडकाया । इसके पश्चात भीड हिंसक हो गई और पुलिसपर पथराव दिया । हिंसा इतनी भयावह थी कि अखिल गोगोईके नेतृत्वमें भीडद्वारा चबुआ रेलवे स्थानकको भी जला दिया गया, जिसके चलते सार्वजनिक सम्पत्तिको भारी हानि हुई ।

विचारणीय है कि गुवाहाटी उच्च न्यायालयने ७ जनवरीको अखिल गोगोईकी प्रतिभूति याचिका अस्वीकृत करते हुए विशेष 'एनआईए' न्यायालयके निर्णयको बनाए रखा था ।

वामपन्थी नेताओंकी मानसिकता जिहादियोंवाली ही है । अपने उद्देश्यको पूर्ण करनेके लिए वे भारत राष्ट्रकी सम्प्रभुताको भंग कर सकते हैं । सभी राष्ट्रवादी, शासन एवं न्यायपालिकासे मांग करें कि अखिल गोगोई जैसे राष्ट्रद्रोहियोंपर कठोर दण्डका प्रावधान हो एवं सार्वजनिक सम्पत्तियोंकी हानिका मूल्यांकनकर दण्ड

सहित उसकी क्षतिपूर्ति, उनकी ही सम्पत्तियोंसे करें ! (११.०१.२०२१)

****

सेठोंके बनाए हुए 'गोदाम' जला दो, उर्दू 'शायर' मुनव्वर रानाने किसानोंके नामपर संसद गिरानेके लिए भडकाया

इससे पहले रानाने अपने वक्तव्यमें पेरिसमें शिक्षकका गला रेतनेवाले आतङ्कीका बचाव किया था। उन्होंने कहा था कि यदि उस लडकेके स्थानपर वह होते तो भी यही करते। विवादित 'शायर' मुनव्वर रानाके इस वक्तव्यको लेकर बहुत विवाद हुआ था।

१० जनवरीको 'सोशल मीडिया'पर अपनी कुछ साधारणसी पंक्तियोंके माध्यमसे इसने पुनः भीडको भडकानेका प्रयास किया। मुनव्वर रानाने 'ट्वीट' करते हुए लिखा था, "इस देशके कुछ लोगोंको रोटी तो मिलेगी, संसदको गिराकर वहां कुछ खेत बना दो। अब ऐसे ही परिवर्तित होगा किसानोंका भाग्य, सेठोंके बनाए हुए गोदाम जला दो। मैं झूठके दरबारमें सच बोल रहा हूं, गर्दनको उडाओ, मुझे या जिंदा जला दो।"

यह प्रथम बार नहीं है, जब मुन्नवर रानाने विष उगला हो। मुन्नवर राना जैसे लोग अपनी 'शायरी'के माध्यमसे राष्ट्रद्रोहका कार्य कर रहे हैं, मुन्नवर राना और उनका पूरा परिवार ही विषवामनका कार्य करता है। मुन्नवर राना जैसे लोग राष्ट्रके लिए बहुत घातक हैं; अत: ऐसे लोगोंके विरुद्ध अभिव्यक्तिकी स्वतन्त्रताके नामपर किए 'ट्वीट'के लिए कडी कार्यवाही होनी चाहिए। एक कहावत है, 'एक सांप कई सहस्र सांप पैदा कर देता है';

इसलिए समय रहते ऐसे विषैलै सर्पोंके विरुद्ध कार्यवाही आवश्यक है और हिन्दुओंको भी चाहिए कि इन जैसोंका और इन जैसोंकी निम्नस्तरीय 'शायरी'का बहिष्कार करें और 'ट्वीटर' पर इसे बहिष्कृत करनेका अभियान चलाएं ! (११.०१.२०२१)

****

उतरप्रदेशमें हिन्दू लडकीके अपहरण व धर्म परिवर्तनके आरोपमें जिहादी जुबराईलकी सम्पत्ति अधिग्रहित

योगी शासनमें उत्तर प्रदेशके सीतापुर जनपदके तंबोर थानेमें २६ नवम्बरको प्रविष्ट परिवादमें लडकीके पिताने आरोप लगाया कि जिहादी जुबराईल अपने साथियोंके सहयोगसे उनकी १९ वर्षीय बेटीका अपहरण व धर्म परिवर्तन कराकर उसे अपने साथ भगा ले गया है; परन्तु इस विषयमें पुलिसने कोई कार्यवाही नहीं की।

यह विषय सामाजिक अन्तर्जालपर आनेके पश्चात पुलिसने पिताद्वारा लगाए गए आरोपों और दी गई सूचनाके आधारपर धारा ३६३, ३६६ के अन्तर्गत अभियोग प्रविष्ट करते हुए आरोपीका साथ देनेके आरोपमें जिहादीके बहनोई उस्मान और भाई इजराइलको पुलिसने कारावास भेज दिया।

पुलिसका कहना है कि मुख्य अभियुक्त जुबराईलको पकडनेके प्रयास किए जा रहे हैं और शीघ्र ही पीडिताको भी पकड लिया जाएगा। अभी इस विषयमें पुलिसकी कार्यवाही चल रही है।

१९ वर्षीय लडकीका अपहरणकर धर्म परिवर्तन करानेके विषयमें 'एसीजेएम' न्यायालयने जिहादीकी सम्पत्ति राजसात करनेका आदेश दे दिया है। आदेश मिलते ही

पुलिसद्वारा शुक्रवारको उसके वाहनको और शनिवार, ९ जनवरीको 'सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट'की उपस्थितिमें घर और भूमिके विक्रयको अवरुद्ध किया गया।

योगी शासन इस हेतु अभिनन्दनका पात्र है। अन्य राज्योंके शासकोंको उत्तर प्रदेशसे सीखना चाहिए।

****

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमें अभियान्त्रिकीके छात्रोंको पढाया जाएगा वैदिक विज्ञान, वेदोंमें बताई गई पद्धतियोंके आधारपर ऋतुका पूर्वानुमान लगाना भी सिखाया जाएगा

पूरा विश्व मानता है कि भारतके चारों वेद प्राचीन विज्ञानपर आधारित हैं और वैज्ञानिक दृष्टिकोणसे लिखे गए हैं। 'सर्वविद्याकी राजधानी' कहा जानेवाला बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय अब इसे सार्थक करने जा रहा है; क्योंकि यहां अभियान्त्रिकीके छात्रोंको भी वैदिक विज्ञानसे अवगत कराया जाएगा। नूतन सत्रमें इसके लिए पाठ्यक्रमकी सिद्धता भी कर ली गई है। इसके लिए सहायक प्राध्यापकके पदोंपर नियुक्ति भी की जानी है।

वैदिक विज्ञान केन्द्रके समन्वयक प्रो. उपेंद्र त्रिपाठीने जानकारी दी है कि आवेदन करनेवाले अभ्यर्थियोंके लिए 'इंजीनियरिंग'से अनुसन्धानके साथ ही १२ वींतक संस्कृतकी शिक्षाको अनिवार्य किया गया है। 'मौसम' विज्ञान केन्द्रमें ऋतुओंसे जुडी गणनाएं भी वेदोंके आधारपर की जाएगी। भारतके ऋषि-मुनि प्राचीन कालमें सनातन धर्ममें ज्योतिष, अंकशास्त्रके साथ वेदोंके आधारपर गणना करनेमें सफल रहते थे। उनकी गणनाएं और आकलन एकदम सटीक होते थे।

वैदिक 'इंस्ट्रूमेंटेशन इंजीनियरिंग स्टडीज' नामक

पाठ्यक्रमकी बात करें तो ये विश्वमें प्रथम बार होगा, जब 'टेक्नोक्रेट' वेदोंमें बताए गए प्रौद्योगिकी ज्ञानपर अध्यापन और शोधकार्य करेंगे । इसके अन्तर्गत वैदिक प्रौद्योगिकीके प्रयोगशालामें उपयोगमें आनेवाले यन्त्रों व उपकरणोंका संचालन व निर्माण भी किया जाएगा । जल शोधन तकनीक, धातु विज्ञान, सूर्य विज्ञान, विमान विद्या और नौका शास्त्र सहित कई पद्धतियोंपर शोध कार्य होगा ।

समाचारके अनुसार, इस केन्द्रके अभ्यर्थियोंके लिए संस्कृतका ज्ञान अनिवार्य रखा गया है; क्योंकि वेद इसी भाषामें हैं । 'बीटेक' और 'एमटेक'के लिए जो योग्यता मांगी गई है, वो तकनीकी पाठ्यक्रमकी ही है ।

भारतमें तो सदैवसे प्रकृतिकी पूजा होती आई है । यहां वैदिक कालसे ही यह चला आ रहा है । विश्वके सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेदका आरम्भ ही अग्निकी स्तुतिके साथ होता है । विशेषज्ञ कहते रहे हैं कि गणित एक ऐसा माध्यम है, जिसकेद्वारा एक नास्तिक भी ईश्वरकी पूजा कर सकता है । इसी विषयमें भारत अन्य सभ्यताओंसे आगे रहा है । ऋषि-मुनियोंने प्राचीन कालमें गणित और प्रकृतिके सम्बन्धोंको समझा है और ईश्वरतक पहुंचनेका माध्यम बनाया है ।

आधुनिक विज्ञानने विलम्बसे ही सही यह माना तो कि वेदोंका विज्ञान सबसे प्राचीन विज्ञान है । प्राचीन सभ्यतामें यह भारतमें व समस्त विश्वमें अत्यन्त विकसित था, जिसे म्लेच्छ और अंग्रेज आक्रान्ताओंने यहांके विश्वविद्यालयोंको नष्टकर, नष्टप्राय कर दिया व यहां रखे अनेक प्राचीन ग्रन्थोंको जला दिया । योगी शासनका यह अच्छा प्रयास है, जो प्राचीन वेद विज्ञानको पुनर्जिवित कर

रहा है। अन्य भी इससे सीख लें और भारतकी शिक्षा पद्धतिसे 'मैकॉले विकर्षण पद्धति' रूपी कलंकको मिटाएं!

****

वैदिक उपासना पीठद्वारा कुछ आवश्यक सूचनाएं

१. वैदिक उपासना पीठद्वारा विजयादशमीसे अर्थात दि. २५/१०/२०२० से ऑनलाइन बालसंस्कारवर्गका शुभारंभ हो चुका है। यह वर्ग प्रत्येक रविवार, त्योहारोंको एवं पाठशालाके अवकाशके दिन प्रातः १० से १०:४५ तक होगा। इस वर्गमें ७ वर्षसे १५ वर्षकी आयुतकके बच्चे सहभागी हो सकते हैं। यदि आप अपने बच्चोंको इसमें सम्मिलित करने हेतु इच्छुक हैं तो पञ्जीकरण हेतु कृपया 9717492523, 9999670915 के व्हाट्सऐप्पपर सन्देशद्वारा सम्पर्क करें।

२. वैदिक उपासना पीठके लेखनको नियमित पढनेवाले पाठकोंके लिए निःशुल्क ऑनलाइन सत्सङ्ग आरम्भ किया जा चुका है।

आनेवाले सत्संगका विषय व समय निम्नलिखित है :

सङ्ख्या सीमित होनेके कारणकृपया अपना पञ्जीकरण यथाशीघ्र कराएं। इस हेतु ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) के व्हाट्सएप्पपर अपना सन्देश भेजें। कृपया पञ्जीकरण हेतु फोन न करें।

अगले कुछ सत्सङ्गोंकी पूर्व सूचना :

अ. नमस्कारसे सम्बन्धित शास्त्र, १५ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे

आ. नामजप कब, कहां और कितना करें ? १९ जनवरी, रात्रि ९.३० बजे
इ. योगनिद्रा २५ जनवरी रात्रि ७.३० बजे

३. वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रत्येक दिवस भारतीय समय अनुसार रात्रि नौसे साढे नौ बजे 'ऑनलाइन सामूहिक नामजप'का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें साधना हेतु मार्गदर्शन भी दिया जाएगा, साथ ही आपको प्रत्येक सप्ताह 'ऑनलाइन सत्सङ्ग'के माध्यमसे वैयक्तिक स्तरपर भी साधनाके उत्तरोतर चरणमें जाने हेतु मार्गदर्शन दिया जाएगा, यदि आप इसका लाभ उठाना चाहते हैं तो आप हमें ९९९९६७०९१५ (9999670915) या ९७१७४९२५२३ (9717492523) पर "मुझे सामूहिक नामजप गुटमें जोडें", यह व्हाट्सऐप्प सन्देश भेजें !

४. जो भी व्यक्ति वैदिक उपासना पीठके तत्त्वावधानमें अग्निहोत्र सीखना चाहते हैं वे ९९९९६७०९१५ के व्हाट्सऐप्पपर अपना सन्देश इसप्रकार भेजें ,'हमें कृपया अग्निहोत्र गुटमें सम्मिलित करें।'

५. कोरोना जैसे संक्रामक रोग एवं भविष्यकी आपातकालकी तीव्रताको ध्यानमें रखते हुए वैदिक उपासना पीठद्वारा संक्षिप्त दैनिक हवन कैसे कर सकते हैं ?, इस विषयमें १५ अगस्तसे एक नूतन उपक्रम आरम्भ किया जा रहा है। इसमें अग्निहोत्र समान इसे सूर्योदय या सूर्यास्तके समय ही करनेकी मर्यादा नहीं होगी, इसे आप एक समय या सप्ताहमें जितनी बार चाहे, कर सकते हैं । यदि आप सीखना चाहते हैं तो ९९९९६७०९१५ पर हमें इस प्रकार सन्देश भेजें, “हम

दैनिक हवनकी सरल विधि सीखना चाहते हैं, कृपया हमें यथोचित गुटमें जोडें।”

प्रकाशक : Vedic Upasana Peeth
जालस्थल : www.vedicupasanapeeth.org
ईमेल : upasanawsp@gmail.com
सम्पर्क : + 91 9717492523 / 9999670915